यादों के काफिले

सि. इलिसबा तिर्की, डी.एस.ए.

जनवरी 2009 – " आज से 123 वर्ष पूर्व फा. लीवन्स ने उस समय की परिस्थिति एवं युग की माँग के अनुसार प्रेरितिक कार्य सम्पन्न किया । आज हमें भी यह प्रेरणा मिलती है कि तत्कालीन परिस्थिति में उनके अधूरे कार्य को पूरा करें। जहाँ संवेदनहीनता की कमी है, वहाँ प्रेम, सेवा एवं भाइचारे का संदेश दें ।"

संस्मरण : 1

छोटानागपुर के महान प्रेरित

पड़ी थी छोटानागपुर की धरती बंजर,
उजड़े हुए चमन में खिल उठे मंजर
सत्रह मार्च अठारह सौ पच्चासी का दिन,
महाप्रेरित कॉन्सटेन्ट लीवन्स का आगमन
परित्यक्ता भूमि हो गयी पुनः पावन।

जैसे लीवन्स ने रखा डुरण्डा में पैर,
वैसे हुई शुरू उनकी सैर।
थड़पखना बंगला में वह करता मिस्सा।
न कभी उसने किसी को समझा गैर,
और न ही किया किसी से बैर।

नहीं था उनके लिए रहने को घर–द्वार,
पर हृदय में था प्रभु येसु का प्रेम अपार।
लुथेरन हो या अंग्रेजी मिशन, क्या संवसार,
उराँव, मुण्डा, खड़िया जाति में नव–संचार
होने लगा ख्रीस्त के सुसमाचार का प्रचार।

लीवन्स को अपने प्रधान से आज्ञा मिली,
कूच करे वह तोरपा की आदिवासी भूमि।
पर वहाँ थी तो सब कुछ की कमी,
फिर भी न हुई येसु के प्रेम की कमी,
यहीं लीवन्स की प्रथम जड़ें जो जमी।

पाँच वर्षों में हुई ख्रीस्तीयों की संख्या दुगुनी,
असीम मेहरबान ईश्वर की यही थी मर्जी।
करनी पड़ी कलकत्ते के आर्च बिशप से अर्जी,
पूरी हुई लीवन्स व जोन डिस्मिथ की अर्जी,
लहलहा उठी छोटानागपुर की बंजर धरती।

संस्मरण – 2

प्रथम चार लोरेटीन मदर

उन्नीस मार्च अठारह सौ नब्बे का मंगल दिवस,
लोरेटीन मदरों ने रचा एक सुनहरा इतिहास।
बिशप स्वामी की अनुमति से मिला अदम्य साहस
कितना आनन्द था राँची आने का यह अहसास ।

उत्साह से ओत–प्रोत मदर मेरी गोंजागा
प्रेम की प्रतिमूर्ति रही मदर मेरी पतरिसिया
साहस का स्त्रोत थी मदर मेरी अलोइसिया
मार्गदर्शन जो मिला प्रथम प्रधानी सि. तेरेसा का ।

आज्ञा पाकर शीघ्र हुई रवानगी
पुरुलिया से चली पुसपुस गाड़ी
पहुँची वहाँ जिसे कहते हैं राँची
जंगल, पहाड़ जानवरों की बस्ती
पेट के खातिर मजदूरों की हस्ती।

रास्ते की लाख कठिनाइयाँ झेल कर
अपने हृदय में येसु का प्रेम संजोकर
लड़कियों व स्त्रियों की आत्मा बटोरकर
येसु के अनमोल वचनों को फैलाकर
बसा लिया प्रेम का एक नया संसार।

संस्मरण – 3
चार फरिश्ते

संत जोन्स स्कूल बना था सिर्फ लड़कों के वास्ते,
तभी कलकत्ते से राँची पधारे अद्भुत चार फरिश्ते।
चार–पाँच सौ लड़कियाँ दौड़ पड़ी शिक्षा के वास्ते,
बेर्ना, बेरो, सिसि, मेरी ने उनसे जोड़े अपने रिश्ते।

राँची में आया ऐसा एक स्वर्णिम काल,
चारों को झकझोरा एक ऐसा भूचाल।
पूरी तरह से बदल गयी उनकी चाल,
ठान लीं वे चलेंगी सदा सुचाल।

मदर थीं प्रेम, सेवा व ममता की मूरत,
फैलने लगी चारों ओर उनकी कीरत
सौम्य चेहरे में सफल जीवन की सूरत
थी बालाओं की यही बड़ी जरुरत।

इस झारखण्ड प्रदेश में मदर थीं अनजान,
मगर येसु को समर्पित था उनका जीवन,
आत्माओं की मुक्ति का मिला जो वरदान,
गरीब–नीच जाति बीच बनीं एक पहचान।

चार बालाओं को थी अपने देश व जातियों की बड़ी फिक्र,
तभी तो करती हैं मदरों के प्रेम, स्नेह व मेहनत का जिक्र।
मदरों के रीत–नीत बात–काम ने बदला उनका चरित्र।
उन बालाओं का जीवन एवं सेवा से बन गया तन पवित्र।
ऐसा था चार लोरेटो मादरों का अद्भुत चरित्र।

संस्मरण – 4
नयी सोच

जब लड़कियाँ हो चलीं चौदह पन्द्रह वर्ष की,
लगी आँखे उनपर माता–पिता व कुटुम्बों की।
जोर, जबरदस्ती करने लगे वे शादी करने की,
यह गुप्त सोच कभी न कबूल हुआ मंजूरी की।

इस पर नाना भाँति उठाना पड़ा है क्लेश,
बढ़ चली बात बेबाक व आपसी ईर्ष्या–द्वेष।
उत्तम सोच से बदलने लगा सारा परिवेश,
कहते माता–पिता, न मालूम अपना देश ।

फादरों ने भी उन्हें खूब धमकाया खबरदार !
लगाओ इन लड़कियों को बेंत और तलवार।
गुप्त सोच से करो न मिशन के कार्य बर्बाद,
यह कार्य हो सकेगा बीस या तीस वर्षों बाद।

बेटियाँ घर आयी थी होकर स्कूल से छुट्टी,
तभी पिता को मिली देहात से एक चिट्ठी।
अनजान होकर पिता ने कहा –"पढ़ दे बेटी !
पर चिट्ठी में अंकित थी उसकी खरी–खोटी।"

पिता को जब मिला पीछे एक मौका,
बेटी पर फिर वह गरज कर चौंका।
बेटी ! अभी ही है एक सुनहरा मौका,
तुम बदल डालो अपने विचार मन का।

संस्मरण – 5
विवाह की जबरदस्त कोशिश

नहीं बदला जब लड़कियाँ ने अपने मतलब,
माता–पिता पर टूट पड़ा विपत्ति का एक पहाड़।

इधर लड़कियाँ थी अपने निर्णय में एकदम अडिग,
कहती रहती विवाह करना सदा नमंजूर।

फादर व मदर नहीं थे अनजान,
इनके मतलबों से सभी परेशान।
कई लड़कों को भेजते फादर,
ताकि लड़कियाँ करें उनसे विवाह।

मदर उन्हें पूछती लड़कों के सामने,
शादी करने में खुशी है या नहीं ?
परेशान हो बेर्नादेत्त ने कह दिया –
" मैं विवाह करना नहीं चाहती। "

मदरों को उसने जोर देकर कहा,
लड़कों के सामने लेना ठीक नहीं।
आप तो देश का दस्तूर न जानती,
क्या ये लड़के भी नहीं जानते ?

मैं स्कूल की लड़की हूँ सही,
पर मैं अनाथ भी तो हूँ नहीं !
अनाथ रहूँ तो आपका अधिकार,
याद रखिए मैं अनाथ हूँ नहीं !

ये लड़के क्योंकर यहाँ आते हैं ?
क्या लड़की चुन लेने के वास्ते ?
हम बाहरी रुप देखकर हाँ न करेंगी,
साफ कहती हूँ कि शादी न करुँगी।

संस्मरण – 6

एक नालिश

जब निष्फल हुई शादी की हर कोशिश
फादरों ने लाट बिशप से की नालिश।
मिशन कार्यों में हो रही हैं कई बाधाएँ,
बिगड़ जाँएगें काम सारे अगर न रोके जाएँ।

छोटानागपुर की यह घटना है सच्ची,
सत्य की खोज में करना है माथापच्ची
पड़ जाएगा यह धर्म यहाँ कच्चा,
अगर यहाँ की लड़कियाँ न करेंगी शादी।

कोई भी अपनी बेटियों को,
पसन्द न करेंगे उन्हें भेजना स्कूल।
कहीं इन लड़कियों की लीक पर,
चलने लगेंगी अन्य लड़कियाँ

फादरों ने की पौल गोथल्स से नालिश
पातीं हैं ये लड़कियाँ मदरों से खूब
इसी वास्ते शादी नमंजूर करती हर बार
ऐसी लड़कियाँ स्कूल से दी जाएँ निकाल बाहर ।

संस्मरण – 7

घोर अंधेरी रात

नालिश सुनकर आर्च बिशप ने निकाला फरमान,
आज्ञा पाकर लोरेटीन मदरों के टूट गये अरमान।
कई फादर और मदर, पिता से बढ़कर बने मीत,
जहाँ दुःख और लड़ाई, वहाँ चैन और जीत।
परमेश्वर ने ही यह सब होने दिया,
मदरों ने आर्च बिशप का हुक्म सुनाया।
उन्हें पास बुलाकर आशिष प्रदान किया,
समझा–बुझा कर स्कूल से विदा किया।

बेचारी बेर्नादेत्त भी अब क्या करती ?
आह भरती, आँसूओं की धार बहाती।
सिसकियाँ भरती घर को जाती
शायद, दिख जाए कहीं आशा की बाती।

माता–पिता, भाई–कुटुम्बों से मिलती दिल की चूर्णता,
मंजिल मिलेगी या नहीं ! उनके जीवन को पूर्णता।
आत्मिक भलाई हेतु प्रेम व दुःख ईश्वर को समर्पित,
पर जग के हर कोने में छायी है घोर अंधेरी रात ।

संस्मरण – 8
एक अर्जी

घर में बेर्नादेत्त की हो गई ऐसी दुर्दशा,
चिट्ठी द्वारा पिता को सुनाई अपनी दशा।
फादरों से विचार कर पिता दिलाए आशा,
ईश्वर की सेवा खातिर मिले नई आशा।

कह उठी बेर्नादेत्त अचानक एक दिन
निर्बुध्दि के कारण नहीं बनते हम धर्मबहन,
गर रहे हृदय में हौसलों का अथाह समन्दर,
करेंगी समग्र समाज की सेवा अति सुन्दर।

चिट्ठी रही अनुत्तरित, पिता रहे सदा अनजान,
जवाब की आस में सूख गई बेर्ना की जान।
एक साँझ को पुनः सुनाई गयी वह फरमान,
बेर्ना पर टूट पड़ी, पिता की कठोर जुबान।

" तुम कितनी मूर्ख उल्लू हो !
तुम तो जानवर से भी गई–गुजरी हो ! "
तुम लोगों के कारण सब हम पर थूकते,
चारों ओर से निन्दा करते नहीं थकते।
" निन्दा और शर्म से हमारे मस्तक
झुक जाते हैं सो तुम्हें न मालूम ! "

पिता फिर समझाते –
कई लुथेरन लड़कियाँ करना न चाहती शादी,
पर कुछ वर्षों के बाद उनकी हो गयी बर्बादी।
तू छोड़ दे अपने मुताबिक करने की आजादी,
अन्यथा हो जाएगी हम दोनों की पूरी बर्बादी।

संस्मरण – 9
उत्तम विचार

अपने पिता की बातें सुन, बेटी का भी चढ़ा पारा,
अंधेरी कोठरी में जाकर फूट पड़ी आँसू की धारा।
घर वालों ने उसे खाने के लिए बार–बार पुकारा,
पर उसे न चाहिए था इस वक्त किसी का भी सहारा।

घराने के लोग न थे मूर्ख व अनपढ़,
वे थे शिक्षित और धर्म के जानकार।
कोई कहता उनका विचार है उत्तम,
कोई कहता बेटी के लिए है अति उत्तम।

कोई कहता नसीब हो इन्हें युवावस्था का अपार सुख,
कभी न मिला इन्हें माता–पिता और कुटुम्बों से दुःख।
पर खान–पान, कपड़े–लत्ते से न खिल सका इनका मुख,
कोई कहता, बड़े प्रेम से बातें करना है इनके सम्मुख।

जीवन के सुख–दुःख से रहे हैं ये अनजान,
सिर्फ प्रेम से होगी इनकी वास्तविक पहचान।
सोनार को बुलाकर जल्द पूरी कर दें लगन,
गहने व श्रृंगार देकर उन्हें कर लें मगन।

संस्मरण – 10
इनकार

झाड़ी में छिपकर शुरू हुआ रोना–धोना,
न लेना मुझे सोनार के गहने और सोना।
कैसी ये आ पड़ी थी दूसरी बड़ी परीक्षा,
बेसब्री से घर वाले करने लगे प्रतीक्षा।

लड़की को न आते देख, होने लगी निराशा,
कब तक देखते रहें, नादान लड़की की आशा,
करती रही सोनार के निकलने की आशा।
जाता देख, उसको मिला थोड़ा दिलासा।

लकड़ी चुनती पहुँची वहाँ बूढ़ी सलोमी,
देख लड़की की हालात वह बोली।
" बेटी ! तू यहाँ छिपी बैठी रोती है ?
घर के सारे लोग कर रहे हैं खोज तुम्हारी

माँ ! मुझे पसन्द नहीं, धारण करना गहना,
मेरी आत्मा और बदन को पड़ेगा सहना।
मैं रखना चाहती हूँ अपने दिल को आबाद,
गहने पहन आत्मा को न करना मुझे बर्बाद।

देख बेटी ! तू हो रही है अभी अभी जवान,
पर अब तक खाली हैं तेरे हाथ और कान।
माता—पिता का प्रेम है एक अमूल्य वरदान,
प्रेम से तू मान ले माता—पिता का हर कथन।

नहीं—नहीं दादी माँ ! प्रेम उनका मैंने अवश्य पाया,
माता—पिता से बातें कर, करो मुझपर दया।
रहँगी मैं सदा आपकी आभारी,
पर न लूँगी यह गहना, कभी न कर सकुंगी शादी।

संस्मरण— 11
श्रृंगार की चाह नहीं

लड़की की बातें सुन बूढ़ी हुई सहमत,
लकड़ी रख सीधे चली माता—पिता के पास।
लड़की को न करना दिक् — दिक् लेकर यही आस,
लड़की की बातें मुझे लगती है बड़ी खास ।

लड़की के मन व दिल की है ये गुहार,
सदा करती गहने व शादी से इनकार।
ये है उनके तहे दिल की मूक् पुकार।
कभी न लेगी वह श्रृंगारों का उपहार।

भला किसे न हो पुत्र—पुत्रियों की चाह,
खबर पाते ही दौड़ पड़ी झाड़ी की राह।
देखती कलपती लड़की को वहाँ बेपनाह,
घर लाकर भोजन खिला, दी उसे पनाह।

सभी चीजें लगती हैं तुच्छ लड़की को,
पर देखो तो उसके हर तमाशे को,
झाड़ी पास जाकर व्यर्थ रोती—बिलखती
देना चाहते जो माता—पिता उसे नकारती।

हम सब कैसे सदा करते श्रृंगार की चाह !
निपट गंवार, पागल, मूर्ख श्रृंगार देख भरती आह,
सुन माता—पिता और कुटुम्बों की सलाह,
तनिक न करती उनकी बातों की वह परवाह।

संस्मरण— 12
भटकता एक मुसाफिर

लुथेरन था पूरण प्रसाद का सम्पूर्ण घराना,
काथलिक बनना, मिशनरियों का नजराना,
लूथेरन साहबों ने उन्हें घोर विरोधी माना,
सहना पड़ा उसे अतिशय कटु वेदना।

दोष लगाकर पूरण को किया डेराखाने से दफा,
फिर भी स्त्री—बच्चों के प्रति वो रहा सदा वफा।
एक गरीब बढ़ई की देवड़ी में हो सका वह रफा,
बेचारे पूरण के लिए बढ़ई भी हुआ खफा।

धर्म के लिए पूरण हुआ उस मण्डली से बाहर,
अपनों के बीच वह हो गया भटकता मुसाफिर।
खाना—पीना, न उठना—बैठना, और न ही नमस्कार,
हो गया वह उस दिन, समाज से दरकिनार।

काथलिकों को अहाते में न रखने देते वे पैर,
रोमन पादरियों से भी वे रखते हैं अति बैर।
चौकीदार भी खदेड़ते हैं उन्हें समझकर गैर,
पूरण बन बैठा बेचारा, भाई—कुटुम्बों के बगैर ।

दिन को भाई—कुटुम्ब भय से न सुनते उनकी आह,
देर रात को मुलाकात कर कम करते उनकी कराह।
बहुतेरे लुथेरन मान हानि समझ देखते रहते सदा उनकी राह,
पर अपनों ने भी नहीं की उनकी कुछ परवाह।

संस्मरण — 13
ख्रीस्त आनन्दित की हिदायत

ख्रीस्त आनन्दित रूत पूरण प्रसाद की जेठी बेटी,
बड़ी लगन से लुथेरन स्कूल में पढ़ती जब थी छोटी
कम उम्र के कारण ही लुथेरन स्कूल में थी बेटी,
पर लुथेरन धर्म में दीक्षित होकर थी बड़ी खोटी।

माता—पिता को थी कैथोलिक धर्म में आस,
पर बेटी को तो थी सच्चे धर्म की तलाश।

इच्छा पूरी न हुई तो लड़की हुई बड़ी निराश,
लुथेरन साहब की पालपोष, न देख कोई गुंजाइश।

स्कूल से अवकाश मिलते ही जब वो पाती अवसर,
घर जाकर माता–पिता को समझाती अक्सर।
जल्द ही रोमन धर्म से आपकी आशाएँ हो जाएँगी बिखर,
धर्म के ज्ञाता हो कर भी आप जाएँगे नरक की डगर।

लड़की बेचारी करती रही रोमन पादरियों की शिकायत,
मूर्तिपूजक कहकर घरवालों को देती रही खूब हिदायत।
पादरियों को गली–गली घूमते देख होती वह बहुत दुःखित।
खबरदार ! ईश्वर विरोधी बनकर न हो जाइए पतित।

संस्मरण – 14
लुथेरन प्रेरितिन

लड़की कहती पछतावा कर अगले धर्म में लौटने को,
सारी मंडली के सामने क्षमा और दया माँगने को।
पर उसकी एक न सुन, तैयार हो जाते सब हँसने को,
उल्टे उसी से कहते वे, कैथोलिक धर्म अपनाने को।

लड़की को देखते जब वे, पकड़ी हुई धर्म की किताब,
लुथेरन प्रेरितिन की हँसी उड़ाने का देखते रहते ख्वाब।
हँसकर उपदेश सुनने को हो जाते थे वे बेताब,
पर थक हार कर खुद भी हो जाती बेबाक।

देख लड़की की चाल, माता–पिता की बढ़ी चिन्ता,
शिक्षकों की बातें सुन, लड़की की भी बढी खिन्नता।
लड़की क्या जाने धर्म–धर्म के बीच की अभिन्नता,
कैसे समझे वह सच्चे झूठे धर्म की भिन्नता।

घर वाले सदा भेजते धार्मिक चीजें बारंबार
रखते शिक्षक अपने पास भेजा हुआ यह अमूल्य उपहार।
रोमी तंत्र–मंत्र कहकर बाकी चीजें जला, लग जाते पार,
शिक्षकों की करनी देख, रोमी धर्म से होती उसे घृणा अपार।

संस्मरण – 15
पूरण की टूटी आशा

बेटी को लुथरेन स्कूल से निकालने की हुई अभिलाषा,
मित्रों साथ गया लुथरेन साहब के पास, ले आशा।
पूरण ने जाकर देखा वहाँ एक गजब तमाशा,
देख साहब का रौद्र रूप, छा गयी निराशा।

उल्टे पांव लौट जाओ नहीं तो लगाऊँगा तुम्हें चाबुक,
चौकीदार ! ओ चौकीदार ! रोमन लोगों को निकालो बाहर।
तुम सब के सब हो चोर, करने आये हो यहाँ पर शोर,
निकल जाओ, नही तो लगाऊँगा एक चाबुक बड़ा जोर।

पाँचों साथियों साथ स्कूल अहाते में पूरन लगा पुकारने,
बेटी खीस्त आनन्दित निकल बाहर आ, हम तुम्हें आये हैं लेने।
बेचारी लड़की रोती रही, दुबक कर बैठी रही घर के अन्दर,
रोती –बिलखती भय से काँप उठी वह डर से थर–थर।

कहला भेजी लड़की, कभी न बनेगी वह काथलिक,
पिता ने किया जुल्म, हटे साहब, चौकीदार अचानक।
देख माता–पिता का दिल शोक से हो गया चूर्ण,
ढीठ लड़की न होने देगी कभी उनकी इच्छा पूर्ण।

रोक दिए फादरों ने पूरण प्रसाद का साक्रमेन्त,
जब तक बेटी न छोड़े, स्कूल और धर्म प्रोतेस्तन्त।
परेशान होकर लाने को, भेजते पिता सुशीला को,
पर खीस्त आनन्दित भगा देती बेचारी बहन को।

संस्मरण – 16
नवप्रभात !

फादरों ने लुथेरन साहब को किया प्रणाम,
बरस पड़े उनपर, जैसे फटता कोई बम।
सुलग उठी साहब के मन–दिल की चिनगारी,
कुछ ही क्षणों के बाद छा गयी अशान्ति।

कम उम्र बना कारण, रहना है पिता के अधीन,
चाह नहीं उसे अपनी पुत्री को देखना पराधीन।

हर हालात में करेगा पिता उसे अपने अधीन,
क्यों न जाना पड़े उसे अदालत के अधीन।

हुई छुट्टी लड़की चली सीधे गाँव की राह,
घरवालों को काथलिक होते देख, भरने लगी आह।
पर उसे तो कभी न थी कैथोलिक बनने की चाह,
राँची लौटकर उस लड़की ने ली पिता की पनाह।

घर में धर्म विषय पर बहस होता रहा बारम्बार,
अक्सर घराना खीस्तयाग में पाता खुशियाँ अपार।
पर ढीठ लड़की जाती है लुथेरन गिरजा हो बेकरार,
शिक्षकों की बातें सुन दिल में होती बहुधा तकरार।

हुई एक बार शिक्षकों से लड़की की मुलाकात,
चल पड़ी असली और नकली धर्म की अदालत।
हुआ मालूम शिक्षकों से असली धर्म की वही बात,
पर बेचारी लड़की के लिए होगा कब नव प्रभात ?

संस्मरण – 17

असल धर्म की खोज

सच्चे धर्म का हुआ सर्वप्रथम प्रचार,
लूथेरन बने, पेट के वास्ते होकर लाचार।
हुआ काथलिक पूरण का घराना सपरिवार,
लड़की के काथलिक बनने का था सबको इन्तजार।

जब शिक्षकों का अन्त हुआ उससे सवाल – जवाब,
देखने लगी तब काथलिकों की सब चाल–ढाल।
लड़की के घर पर रहते ही आया एक ऐसा काल,
देखने लगी वह अब उन पुरोहितों की कुचाल।

लड़की के घर आने लगे कई फादर,
आने की खबर सुन छिपी रही घर के अन्दर।
फादरों के वचन सुनने आये लूथेरन, संवसार,
सुमधुर बातें सुन होने लगा और नव जीवन का संचार।

दरवाजे की ओट में छिपकर देखने की हुई इच्छा,
सोचकर कि ठीक ढंग से लूँगी फादरों की परीक्षा।
लड़की को ढूँढ़ लाने की पिता ने की प्रतीक्षा,
पर पूरी न हुई लड़की के आने की सदिच्छा।

फादरों के मधुर वचन सुन लड़की को हुई प्रसन्नता,
आहिस्ता –आहिस्ता मिटी उसके मन–दिल की खिन्नता।
लड़की ने देखी निज आँखों से फादरों की मिलनसारिता,
समझने लगी थी असली और नकली धर्म की भिन्नता।

संस्मरण – 18

आया वह शुभ दिन

आखिर अचानक आ गया वह शुभ दिन,
पिता पूरण जाते थे कचहरी प्रतिदिन।
पहुँचाते थे भोजन, सेवक या छोटी बहन,
दोनों बहनें गई एक दिन पहुँचाने भोजन।

जेठी बेटी को आता देख पिता ने दी फादरों को खबर,
कहा, गर्मी के कारण आज वह बिताएगी यहाँ दोपहर
यही वक्त है आत्मा को बटोरने का एक सुनहरा अवसर
कहा पिता ने – " फादर जी, आज आइएगा जरूर। "

फादर थे येसु के प्रेम से प्रज्जवलित,
अवसर पाकर वे हुए अति प्रफुल्लित।
आकर हुए आत्मा बटोरने में सम्मिलित,
अवसर देख लड़की को करने उत्प्रेरित।

लड़की थी लाचार पर थी वह बड़ी दूरदर्शी,
सोच से परे उसने पाया पुरोहितों को मृदुभाषी।
पुरोहितों को मिला क्रूस–चिन्ह बनाने की खुशी,
हँसकर बेचारी लड़की को दिया खूब शाबासी।

संस्मरण –19

विचलित मन–दिल

लड़की की गई फिर से लूथेरन स्कूल में ग्रहण,
पिता की इच्छा बिना, स्कूल आने का दिया वचन।
मिशन की पाल पुत्री मान, किया उसका भार वहन,
बड़ी ही खुशी से उन्होंने थाम लिया उसका दामन।

किसी बात की घटी नहीं, पर मन–दिल था डाँवाडोल,
बिशप धर्म की जाँच करते, लगती उसे दुनिया गोल।
उन्हीं दिनों दी जाने लगी, रोमन धर्म–विरोधी शिक्षा,
इन बातों को सुन, लड़की कैसे दे अपनी यह परीक्षा।

शिक्षा से होने लगी लड़कियों के मन में गड़बड़।
असल धर्म की जाँच परख के लिए लगती हड़बड़ी।
धर्म विषय पर लड़कियाँ थी बड़ी ही नादान,
प्रश्न पूछकर खोजने लगतीं उसका निदान।

शिक्षकों ने बतलाया –" कौन है असल गिरजा ?",
वही है असल गिरजा, जिसे प्रभु येसु ने सिरजा,
धीरे–धीरे कैथोलिक धर्म में हो गया कुछ बिगाड़,
लूथर की कोशिश से भी न बन पाया सुघड़।

19 मार्च 1890 को हुआ लोरेटीन मदरों का आगमन,
चाह थी पूरण की बेटियों का हो स्कूल में नामांकन।
यह सोचकर कि इससे सुधरेगा लड़कियों का जीवन,
उन्हें पूछने लगीं, उनको घर बुलाने का असली कारण।

संस्मरण – 20
धत् तेरी रोमन भूतनी !

1890 को हुई राँची में लोरेटीनों की बुलाहट,
पूरण का बेटियों को पढ़ाने की बढ़ी चाहत।
आनन्दित को लाने गयी सुशीला हुई आहत,
खदेड़ी गयी, " धत् तेरी ! रोमन भूतनी, हट !"

घराने के लोग पा चुके कैथोलिक धर्म में छाँव,
अकेली लड़की ने लूथेरन धर्म में लगायी दाँव।
सच्चाई की खोज में डोलते रहे उसके पाँव,
समुद्र की लहरों के बीच जैसे हिलती है नाव।

छुट्टी हुई तो लूथेरन साहब ने ली लड़की से सहमति,
कुछ दिन के लिए जाएगी घर यदि मिले उसे अनुमति।
घर जाकर भी वह कैसे और किससे जोड़े अपनी संगति,
तूफानी लहरों के मानिंद होती रही सदा उसकी दुर्गति।

काथलिक गिरजा जाती, पर उसे कुछ नहीं भाता,
लहरों के सदृश सोच, बारम्बार उसके मन में आता।
क्या इस दुनिया में, परमेश्वर के सिवा है कोई दूजा,
रोमन काथोलिक क्यों करते हैं मरिया की भी पूजा ?

संस्मरण – 21
मरिया का अद्‌भुत चमत्कार

कहीं भी राजा को मिलता है प्रजा से सम्मान,
उसकी माता को भी मिलता है आदर–मान।
करता न कोई उसके घरवालों का अपमान,
वैसे ही कैथोलिक देते हैं मरिया को सम्मान।

दूसरी बार लड़की जब गई पवित्र मिस्सा,
उसके साथ हो गया एक अजीबोगरीब किस्सा।
उसने डाली लूर्द की निष्कलंक मरिया पर दृष्टि,
हो गई उसपर अपार कृपाओं की वृष्टि।

मरिया पर दृष्टि डालकर हो गई अति मोहित,
मन–दिल बिल्कुल बदलकर हो गई सुशोभित।
प्रोतेस्तन्त धर्म में न मिलता मरिया को सत्कार,
कह उठी, हो न हो सच्चे धर्म का यही है सार।

कभी कैथोलिक धर्म की बातें सुन भरती थी आह,
पर अब वह न करने लगी है किसी की परवाह।
मन–दिल में समाने लगा अब रोमन धर्म की चाह,
अब वह मानने को तैयार नहीं और किसी की सलाह।

नहीं चाहती थी वह जीवन को करना बर्बाद,
चाह थी सच्चे धर्म में रहने को सदा आजाद।
हो गई वह असल कैथोलिक धर्म से आबाद,
लूथर साहब को उसने दिया कोटिश धन्यवाद।

संस्मरण – 22
कभी खुशी, कभी गम

कभी खुशी कभी गम, जिन्दगी में न होती कभी कम,
2 जून 1890 को कॉन्वेन्ट स्कूल में भर्ती होकर लिया दम।

कॉन्वेन्ट स्कूल में आकर मन–दिल हुआ आनन्दित
खूब खुशी से सीखने लगी धर्म ख्रीस्त आनन्दित।

लड़की व पाँच स्त्रियाँ 31 जुलाई को लीं प्रथम परमप्रसाद,
ख्रीस्त आनन्दित रूत को नया नाम मिला मरिया बेर्नादेत्त।
सुशीला बनी सिसिलिया, कृपा को नाम मिला बेरोनिका,
सहेली मोक्ता विधवा की बेटी का निज नाम रहा मेरी।

21 फरवरी 1892 को दृढ़ीकरण लिया तीन जन,
मेरी और बेरोनिका को पूर्व ही मिला था दृढ़ीकरण।
बेर्ना, सिसि और पिता को मिला दृढ़ीकरण गोथल्स से
कैथोलिक होकर रहने लगे, दिल में शांति व सुकून से।

कभी खुशी कभी गम, जिन्दगी में होती कभी न कम,
स्कूल में दो वर्ष न बीते कि बेरोनिका पर गिरा बम।
शादी के बन्दोबस्त से वह नाखुश रहने लगी एकदम,
दौड़ कर पेड़ के शिखर पर चढ़, लिया उसने दम।

यहाँ से चले जाओ, मुझे शादी करना मंजूर नहीं भाई,
कहकर परवाह किये बगैर, बैठी रही चिड़िया की नाईं।
लड़का मुँह लिये लौटा, दूसरी लड़की से कर ली शादी,
वह पागल हो कर मरा और बेरोनिका की न हुई बर्बादी।

संस्मरण – 23
तीस वर्ष के बाद

चारों लड़कियाँ अपने दिल में लेकर आये हैं बड़ी आस,
अपने मतलब प्रकट किया जॉन मेरी डिस्मिथ के पास।
मिला उन्हें प्रेम, साहस, प्रेरणा, शांति और उत्साह,
मदर मेरी तेरेसा ने बात–काम से दी उन्हें सलाह।

फा. सपार्ट, फा. हागहेनबक ने दिखाये जीवन के पथ,
पर अन्य फादर, व मदर लोग समझने लगे इसे व्यर्थ।
हाँ, बीस–तीस वर्षों के बाद ये हो सकता है सफल,
पर अभी समय नहीं, इसलिए यही सोच है व्यर्थ।

इन लड़कियाँ को शादी करना बिल्कुल था नामंजूर,
स्कूल से निकाले जाने का यही था एकमात्र कसूर।
मदर मेरी गोंजागा दुखड़ा सुन ढाढ़स बँधाई भरपूर,
बेटियो, मैं आपकी इच्छाओं की पूर्ति करूँगी जरूर।

तुम कभी हिम्मत न हारना, चाहे अड़ा रहे ये जमाना,
सदा सुचाल लड़कियाँ बन, जमाने का करना सामना।
येसु को दिल से प्रेम करना, येसु में सदा लीन रहना,
इस कदर, मदर ने सिखाया, सभी लड़कियों का जीना।

फा. डिस्मिथ, मदर गोंजागा व मेरी तेरेसा की एक थी अर्जी,
बिशप पौल गोथल्स ने पूरी कर दी उनकी वह तेज मर्जी।
चारों लड़कियाँ पुनः बुलाई गयी, जो थीं स्कूल जाने से वंचित,
यह आज्ञा सुन कर लड़कियों का दिल हुआ आनंद से सिंचित।

संस्मरण – 24
एक पागलपन

लड़कियाँ नहीं चाहती थी अपना वक्त गँवाना,
बेरोनिका को गाँव से लाने को तीनों हुई रवाना।
भयंकर घोर वर्षा, तौभी आगे बढ़, गई परवाना,
इस कदर आगे बढ़ी, जैसे बढ़ चले कोई दीवाना।

भींगे परिधान मुश्किल था कदम बढ़ाना,
परिचितों के घर पड़ गया रहना।
अपनों के घर जाने उनकी खुशी का न रहा ठिकाना,
भींगे वस्त्रों को सुखाने हेतु, पड़ा आग सुलगाना।

बहुत अर्जी कर चाहा उनको वहीं ठहराना,
नहीं मानने पर भोजन खिला, पड़ा भेजना,
उन्हें क्या मालूम था नदी का भर जाना,
गाँव आने की खुशी में उनकी एक माना।

मनाही के बावजूद वे पहुँची नदी के अति निकट,
साँझ होने के कारण समस्याएँ आ पड़ी हैं विकट।
गाँव की नाव का अब उन्हें न मिल पाएगा टिकट,
एक नाव तो बाढ़ से पहुँच चुकी प्रभु के निकट।

संस्मरण – 25
केवट ! हमें पार उतारो !

सामने विशाल नाला था जो पानी से उमड़ा था,
नाले को पार किया, सामने उफनती नदी पड़ी थी।
डोंगाइत जो लड़कियो के निज घर का भाई था,
नाव को बाँधकर घर जाने को निकल चुका था।

दूर में आदमी को देख लड़कियाँ लगी पुकारने,
कौन हो ! आ जाओ ! नदी से हमें पार उतारने !
लड़कियों की पुकार सुन आदमी लगा लौटने,
किनारे बँधे नाव को खोलकर लगा वह खेने।

लड़कियाँ थी डोंगाइत की अपनी ही निज बहनें,
बहनों के खातिर भाई तैयार हुआ हर कठिनाई सहने।
नदी पार कर संग–संग वे लगी घर की राह चलने,
बड़ी खुशी से साहसी भाई को लगी वे धन्यवाद देने।

सप्ताह भर में गाँव से लौट गयीं कॉन्वेन्ट,
मदरों ने लगाया उन्हें नाना भाँति कार्यों में।
लड़कियों की होने लगी वहाँ अच्छी देखभाल,
मदर देखने लगी, लड़कियों की चाल–ढाल।

धर्म–शिक्षा, गिरजा काम और वेदी सँवारना,
गोदाम, बीमारों की सेवा और बावर्ची खाना।
रात को जागना और मुर्दे को धोना–सँवारना,
पड़ता था उन्हें इन सेवा के कार्यों को करना।

संस्मरण– 26
सेवा का एक अवसर

एक ही दिन दो जन प्रभु में सो गई लगातार,
तीसरी लड़की कराह रही थी खाट पर।
नजरें चढ़ जाती, निहायत हो गई कमजोर,
बीमारी की हालत देख कैसे हो गुजार।

रात सेवा हेतु मदर दे पज्जी व बेर्ना की बारी,
लड़की खुद थी डरपोक और थी रात घोर अंधेरी।
गीदड़ या उल्लू से डरना, उसकी थी ये लाचारी,
मुर्दे को देख कर अत्यंत भयभीत होती थी बेचारी।

करने लगीं सेवा बीमार लड़की की बेर्ना और मदर,
थकावट से चूर–चूर हो चुकी आज मदर इस कदर।
जिससे जाँच हेतु मिल गया उसे यह सुअवसर,
सोने गई मदर, लड़की को दे सेवा का अवसर।

देखा कि लड़की पहले की अपेक्षा दिखती है आराम,
बत्ती व घड़ी छोड़ गई और दवा–पानी देने का फरमान।
अगर मर भी जाए तो कुछ न होगा हराम,
बस अब पूरी हो ईष्वर की इच्छा और काम।

साढ़े दस बजे लड़की को समझाकर गई मदर,
अब लड़की पर आ धमका चिन्ता का एक पहर।
शर्मिन्दा होकर चुपचाप रह गई अन्दर ही अन्दर,
ग्यारह, बारह एक बजे भी लौटकर न आई मदर।

संस्मरण – 27
हाय ! बेचारी लड़की क्या करेगी ?

घोर अंधेरी रात में मुर्दे व गीदड़ से जूझती,
बेचारी लड़की को कुछ भी उपाय न सूझती।
न मुर्दे को, न बीमार लड़की को बचा पाती,
घोर अंधेरी रात में जैसे वहीं थर–थर काँपती।

अगर भाग जाऊँ तो लड़की भी मर जाएगी,
मुर्दे को गीदड़ फाड़े, यह बड़ी नीच बात होगी।
डर से लड़की की 'नरेटी' मानो बन्द हो जाएगी,
हाय ! हाय ! बेचारी लड़की अब क्या करेगी ?

थोड़ी देर बाद उठ खड़ी हुई खुद को सम्भाल,
प्रार्थना में दूतों से करने लगी अजीब सवाल,
सब जोखिमों और नुकसानों से कर मेरी देखभाल।
स्कूल के रक्षक दूतो, तू बन जा हमारा रखवाल।

भागती–भागती लड़की गई कॉन्वेन्ट के अन्दर,
देखती क्या है कि मदर सो रही है बड़ी सुन्दर।
करने लगी साथियों से अर्जी, अपने स्कूल जाकर,
पूरी की मर्जी कुछ लड़कियों ने साथ चलकर।

लड़कियाँ गीदड़ भगाने में देने गयी बेर्ना का साथ,
पर इस कार्य में अवश्य था रक्षक दूतों का हाथ।
रक्षक दूतों को तहे दिल से धन्यवाद देने में जुटी,
मदर की नींद टूटी तो उनकी बातें सुन हँसी फूटी।

संस्मरण – 28
दिल को चैन कहाँ !

लड़कियाँ थी वे कॉन्वेन्ट के कार्यों में व्यस्त,
घर के लोग थे विवाह के काम में व्यस्त।
माता–पिता भाई–बहन सब के सब थे कितने बेचैन,
तीन–तीन जवान बेटियों को देख, मिले कहाँ दिल में चैन।

बेर्नादेत्त, सिसिलिया और बरोनिका के वास्ते,
जबरन बना रहे थे उनकी शादी के रिश्ते।
घराने के लोगों ने चुने तीन प्रोतेस्तन्त फरिश्ते,
थे धर्म के पक्के, धनी एवं सुशिक्षित वे लड़के।

मनरेसा के बड़े फादर से बातें कर मीठी–मीठी,
महाधर्माध्यक्ष पौल गोथल्स से माँगा है छुट्टी।
बामुश्किल धर्माध्यक्ष को किये हैं अपनी मुट्ठी,
खुशी से नहीं, पर जोर जुल्म से मिली छुट्टी।

लड़कियों को न थी इस शादी की जानकारी,
दोगली शादी में कैसे होगी उनकी वफादारी।
लड़कियाँ खुद थीं अपने जीवन की अधिकारी,
पर झूठा दोष लगाकर बढ़ाया उनकी बेकरारी।

संस्मरण – 29
जाँच पर जाँच

लड़कियों की जिन्दगी में आते देखकर आँच,
महाधर्माध्यक्ष की स्वीकृति की होने लगी जाँच।
फादर और मदर जाँच के निमित थे अति परेशान,
क्योंकि लड़कियों के विष्वास पर था उन्हें शान।

मदर को विश्वास न हुआ सुन उनकी खराब चाल,
खबर सुनकर मदर हुई उदास व बेहाल।
मदर को मालूम था उन सभी लड़कियों की सुचाल,
फिर भी पूछने लगी है लड़कियों का हाल।

लड़कियों को क्लास से बुला भेजा काम के बहाने,
मदर एक–एक कर लड़कियों से लगी पूछने।
फादर निज कान से छिपकर लगे वार्तालाप सुनने,
झूठी बातें सुन लड़कियाँ लगी बहुत घबराने।

तीनों लड़कियों के जवाब अनजाने भी थे एक जैसे,
किसी लड़के से न हुई बातें, न मुँह से, न चिट्ठी से।
नीच दोगली शादी कर नहीं चाहती 'स्व' की बन्दगी,
बुलाकर उन्हें पूछ लें, कहाँ और कैसे चले जिन्दगी।

ईर्ष्या से दोष मढ़ा ताकि हो जाए उनकी बदनामी,
कुहक–कुहक कर कहने लगी, कभी न भरेंगी हामी।
सबों को जब मालूम हुआ, लड़कियों की असलियत,
बड़े फादर ने लाट बिशप से कहा उनकी हकीकत।

संस्मरण – 30
सीधे घर चलो

जमाना था ऐसा जिसमें शादी करने की थी रीत,
और सभी लोग जानते थे इस देश की रीत–नीत।
घरवाले जोड़ना चाहते थे तीनों लड़कियों का प्रीत,
तैयारी होने लगी खान–पान, गाजा, बाजा व गीत।

हुए तैयार जब वर, सास–ससुर और सारे रिश्तेदार,
लड़कियों को घर ले जाने आया पिता, होकर तैयार।
सुन रही थीं लड़कियाँ उस वक्त फादर का उपदेश,
कॉन्वेन्ट जाकर पिता ने दिया घर चलने का आदेश।

सुनकर कड़ी आवाज भय और उदासी में थी वे पड़ीं,

अभी ठहर आइए कहने लगी बेर्नादेत्त होकर खड़ी।
मदर की छुट्टी दरकार नहीं, पिता ने लगा दी झड़ी,
सब देख रहे थे तमाशा, करके आँखें बड़ी–बड़ी।

मदर को बुलाने भेजा ने फादर करके उन्हें इशारा,
फुर्ती से आकर मदर ने पूरण प्रसाद को पुकारा।
लड़कियो जल्दी चलो ! कहकर पूरण ने दुत्कारा,
विदा हुईं वे, फादर ने दिया प्रार्थना का सहारा।

संस्मरण – 31
दिल टूटा और आशा फूटी

फादर ने कहकर विदा किया, परीक्षा में रखना आशा,
दोगली शादी से सावधान कभी न आने देना निराशा।
बहादुरी और निर्भयता से कभी न होगी आपकी दुर्दशा,
ईश्वर अवश्य पूरी करेगा, आप लोगों की अभिलाषा।

फादर ने तस्वीर देते हुए दिया एक उत्तम सलाह,
आशिष ग्रहण कर घर चलीं वे, भरती हुई आह।
रवाना हुईं घर की ओर न होते हुए एक भी चाह,
सीधे घर चलीं, करके पिता के आदेश की परवाह।

रास्ते में हुई जेम्स नामक एक प्रचारक से मुलाकात,
कहा – बेचारी लड़कियो ! यह है गम से भरा प्रभात।
खबरदार ! अपने दिल से लड़कर बनो विजयी साक्षात,
आप लोगों पर आ धमका है, विकट परीक्षा का आघात।

सिर्फ विवाह से ही नहीं, धर्म से भी चाहते डिगाना,
जान–बूझकर ऐसी दोगली शादी का क्या ठिकाना।
कैथोलिक धर्म में चलने से कभी भी मत डगमगाना,
उचित सलाहों से जेम्स चाहता था ढाढ़स बँधाना।

संस्मरण – 32
नामजद घराने के सुन्दर जवान

कभी प्रार्थना की बातें करती थी मनमोहिनी,
दिल में हतोत्साह, चमक थी मानो दामिनी।
दृढ़ मनसूबा बाँधे, प्रभु येसु की वह प्रार्थिनी,
संकट में विजयी होकर बने प्रभु की संगिनी।

घर पहुँचते ही दिया गया उन्हें गर्म भोजन,
पर खायें कैसे ? उदासी में व्यंजन रूचे कैसे ?
बात करने का दिल नहीं, कंठ फुल गया हो !
फिर भी जबरदस्ती भोजन खिला दिया वैसे।

भोजन के बाद हुई चिकनी–चुपड़ी फुसफुसाहट,
अनसुनी करती रही बातों की हर एक आहट।
बार–बार कहने पर भी चेहरे पे न थी घबराहट,
कोई उपाय न था सिवाय सहने थी एक मात्र सतावट।

नहीं–नहीं हम कभी भी न करेंगी शादी,
तिसपर भी क्यों चाहते हैं हमारी बर्बादी !
हाँ कहकर दे दो अपने दिल की जुबानी,
न होने दो बर्बाद कभी अपनी जवानी।
हैं नामजद घराने के सुशिक्षित, सुन्दर जवान,
सचमुच आप लोग तो हैं बड़े ही भाग्यवान।
इनकी संगति से सफल हो आपका ये जीवन,
अपने–अपने धर्म को ही रखना सदा पावन ।

संस्मरण – 33
एक जवान की ख्वाहिश

तीनों ने एक स्वर से विवाह करने से किया इन्कार,
तब रंज होकर भाँति–भाँति झेला है हर तकरार।
ढीठ, मूर्ख कहकर दिया धमकी, पर न हुआ इकरार,
निहायत ढीठ, पागल रहकर भी पूरी करेंगी करार।

पिता लौटकर करेगा मार–पीट, रखो ख्याल,
मार–पीट और लज्जा से हो जाओगी बेहाल।

ये हाल सुनकर भी ज्यों का त्यों रहीं उनकी सुचाल,
पिता के लौटने पर क्रोध से आँखें हुईं लाल।

बेरो और सिसी को कमरे में बन्द कर जड़ा गया एक ताला,
उन्हें बहकाने बिगाड़ने के लिए बेर्ना का दिया गया हवाला।
पर तीनों के ह्रदय में सुलग रही थी प्रभु के प्रेम की ज्वाला,
हर गम सहकर भी सुसमाचार फैलाने को तैयार थी बाला।

लोगों की भीड़ से भरा था भीतरी आंगन,
बेर्नादेत्त लायी गयी उनके सम्मुख उस प्रांगण।
नाते – रिश्तेदार उससे हाथ मिलाकर देने लगे चुम्बन,
बेचारी सह रही थी अकेली कांटों की हर चुभन।

बेर्नादेत्त से हाथ मिलाने आ धमका एक जवान,
यही तेरा वर है भीड़ से किसी की फूटी जबान।
उस पर सुदृष्टि फेर, हाथ मिला, ऐ भाग्यवान !
झट छुपा लिया हाथ उसने चूँकि वह थी प्रभु के लिए कुर्बान।

संस्मरण – 34
पराये घर की बेटी

अमीर हो या गरीब, लड़कियाँ हैं परायी,
एक पराये की बेटी बनती घर की रानी।
छि ! छि ! तुझे लाज नहीं, तेरी जवानी,
बेरो और सिसी ने दिया शादी की जुबानी।

करते हैं तो करने दे, उन दोनों को शादी,
मैं इन्कार करती और न चाहती अपनी बर्बादी।
बेर्नादेत्त को मालूम था कि है यह एक कहानी,
घराना हो चुका था विपरीत चलने की आदी ।

बनावटी बातों से चाहते थे उन्हें मनाना,
वे न चाहती थीं अपना जीवन गँवाना।
देखें, कितना चलता है ऐसा, ये जमाना,
फूटी कौड़ी न देंगे, कहा उनका घराना।

नातेदार का बड़ा भाई पास ही था खड़ा,
सबक सिखाने को बेर्ना के पीछे पड़ा।
धक्का–मुक्का करते बेर्नादेत्त को पकड़ा,
प्रेम से न बनता ! यह कहकर एक थप्पड़ जड़ा।

संस्मरण – 35
निज प्राण भी खो दूँगा

बोल शादी करेगी कि नहीं ! नहीं तो होगी तेरी दुर्गति,
नहीं कदापि नही ! लड़की सहने को तैयार थी विपत्ति।
शैतान का बच्चा ! क्या तुझे पसंद नहीं लोगों की संगति !
भीड़ बोल उठी – धीरे–धीरे हो जाएगी उनकी संगति।

पिता दुःखित और नाराज हो भरने लगा आह,
व्यर्थ ही विपत्ति झेल, पालन–पोषण कर किया गुनाह।
बचपन में ही माँ के संग मर जाती तो भी न थी कोई परवाह,
पिता की बातें सुन, आँखों से बहने लगे अश्रु अथाह।

कमरे के अन्दर से पिता गरज उठे व्यर्थ,
कहने लगे अपने को रोकने में हूँ असमर्थ।
निज हाथों से गोली देकर कर दूँगा अनर्थ,
सचमुच ! मैं निज प्राण भी गँवा दूँगा व्यर्थ।

ऐसी बातें सुन बन्दूक और पिस्तौल छिपाया,
भाई–बन्धुओं ने भी पिता की हालत देख कर धमकाया।
सबों ने खूब जोर देकर लड़की को यह समझाया,
'मुझे शादी करना मंजूर है', कहकर दे दो सफाया।

संस्मरण–36
कहीं मैं दिव्यांग तो नहीं ?

हुक्म मिला बेटा ! पकड़ ले लड़की का हाथ,
दृढ़ प्रतिज्ञा है, धर्म के विषय पर दूँगा साथ।
बस एक ही बार दृष्टि लगाकर मुझसे कर ले बात,
मैं लंगड़ा, लूला, काना, गूँगा, बहरा और न ही कोई परजात

बस एक बार हाथ मिलाने का करने लगा आग्रह,
लड़की का हाथ पकड़ने का प्रयत्न किया साग्रह।
शक्ति भर कर करने लगी दुराग्रह,
आपकी कभी न होऊँगी कह ठुकराया उसका आग्रह

कहने लगा लड़का राही, बटोही करते हैं सलाम,
पर यह तो था बिल्कुल अलग प्रकार का सलाम।
लड़की बोल उठी यह तो नहीं है साधारण सलाम,
तू न करना मुझे भूल से भी इस तरह का प्रणाम।

मत सोचना कि किसी लड़के की हूँ दीवानी,
गर ऐसी बात है तो यह भूल है मेरी जुबानी।
बुरे सोच लाकर मेरे जीवन में न लगा गहन,
शादी न कर मैं होना चाहती हूँ खुद कुर्बान।

पिता सुन रहा था लड़की की बातें घर के अन्दर,
गरजते निकला वह हाथ में लिये नंगी तलवार।
हो ! हो ! जोर से चिल्ला उठी भीड. एक ही बार,
बेर्नादेत्त ! भाग निकल यहाँ से जल्दी तू कहीं दूर।

संस्मरण – 37
अग्नि परीक्षा में सफल

द्वार खोल, लड़की को दिया भागने का अवसर,
मिला पिता के जुल्म से उसे छुटकारे का सुअवसर।
पिता का हुक्म पाकर पीछे दौड़े, निकालने को हर कसर,
लौट आकर दिया पिता को असफलता की खबर।

खबर सुन पिता पर छा गया गुस्से का कहर,
आज के बाद उसे न मिलेगा पैर रखने का कोई अवसर।
स्कूल में न रखे इस लड़की को सिस्टर और फादर,
चिट्ठी लिखकर तुरन्त ही दे दूँगा इसकी खबर।

चार बजे कॉन्वेन्ट पहुँचकर पूरी की अपनी मनोकामना,
साक्रामेन्त के सामने आँसू बहाकर जीता सारा जमाना।
भले आदमियों की प्रार्थना से पूरी हुई उसकी कामना,
येसु को चढ़ाया, कोटिश धन्यवाद की एक प्रार्थना।

देख अकेली बेर्नादेत्त को मदरों को होने लगी घबराहट,
और न मिली उन्हें बेरोनिका और सिसिलिया की आहट।
उन दोनों को वहाँ न पाकर बेर्नादेत्त हुई बहुत चिन्तित,
सन्ध्या को तीनों मिलकर हो गयीं प्रभु प्रेम से प्रज्वलित।

संस्मरण – 38
दरिद्रता की कठिन एक परीक्षा

तीनों बहनें आपस में मिलकर हुई आनन्दित,
एक दूजे का हाल सुनकर हुई अति प्रभावित।
बेर्ना को सीधी लड़की कह, दोनों हुए चिन्तित,
षादी करना नामंजूर, पर स्वीकार है होना प्रताड़ित।

बेर्नादेत्त करती है तो कर लेने दे शादी,
पर शादी कर हम नहीं चाहती हैं बर्बादी।
बड़े भाई ने थप्पड़ दे सिसी को कहा बकवादी,
छोटी लड़की होकर बन गयी थी हठ की आदी।

बेरोनिका थी सबसे बड़ी, उसे मार एक न पड़ी,
माँ थी बाहर खड़ी, लड़कियों से काम जो पड़ी।
माँ ने उन्हें बाहर बुलाया तो दोनों हो गयीं खड़ी,
ऐसा सुनहरा अवसर देख, दोनों हुई भाग खड़ी।

अगले दिन एक चिट्ठी आई घर से, बेर्नादेत्त के नाम,
घुड़की और नालिश से भरा पत्र लगा मदरों के हाथ।
इन मदरों ने इस चिट्ठी का तनिक भी न किया परवाह,
दिल जली बातें सुनने की एक न थी चाह।

करने लगे माता–पिता कपड़े–लत्ते की माँग,
कभी न रचा बेर्ना कपड़ा भेजने में स्वांग।
सजाकर भेजा संदूक, न लगे खुद पर दाग,
अन्दर एक चिट्ठी डाल, पूरी की उनकी माँग।

संस्मरण – 39
प्यार भरा एक खत

खत लिखकर माता–पिता को दिया उसने प्यार,

दिया मैंने आप लोगों को दिक् और दुःख अपार।
किया बात–काम और चाल से आपका अनादर,
अर्पित करती हूँ मैं ह्रदय से धन्यवाद व आभार।

रंज और अनादर कर दिखायी मैंने ढिठाई,
आप लोगों ने तो चाहा सिर्फ हमारी भलाई।
मैं दोष न देती हूँ सब में थी आपकी अच्छाई,
आपके कर्त्तव्य पालन से निकल आई मेरी ही भलाई।

दुनिया के सामने हो गई आपकी निंदा साफ,
हमारी सारी करतूतों को अब कर देना माफ।
मेरे प्रति आपके प्रेम से दुनिया है न अनजान,
बड़ी तत्परता से उन्होंने आपको लिया है पहचान।

जिन्दगी भर बनी रहेगी आपके प्रेम की याद,
उदास न करुँगी, आपकी सेवा की फरियाद।
जिन्दगी में जितना भी हो अश्कों की तादाद,
पर कृतज्ञ दिल से सदा करूंगी आपको याद।

संस्मरण – 40
निर्धनता की प्रतिमूर्ति

लड़की ने भेजे कपड़े–लत्ते व चिट्ठी सही सलामत,
अचम्भे में पड़कर आ गई एक और बड़ी आफत।
लाचार दशा में रहकर भी न की कभी शिकायत,
मदर और लड़कियाँ ने दिया मदद की हिदायत।

फा. डिस्मिथ व मदर मेरी तेरेसा ने किया परवाह,
आज, खत्म हो गई दुःख–तकलीफों की एक आह।
आह्लादित हुआ मन–दिल और छाया अपार हर्ष,
सह्रदय धन्यवाद अर्पित किया, प्रकट किया आनंद और हर्ष।

धन्यवाद के साथ हम करती हैं स्वीकार,
मिस्सा, प्रार्थना व दंड का यह उपहार।
अगर न मिलता आप सबों से प्यार अपार,
अवश्य हमें मिलती इस संकट में बड़ी हार।

बिशप पौल गोथल्स ने भी किया देख–भाल,
किया उनके कोन्वेन्ट जीवन पर कई सवाल।
आपको ठहरना पड़ेगा आठ वर्षों का काल,
फिर विचार करुँगा यदि बनी रहेंगी सुचाल।

संस्मरण – 41
बिशप पौल गोथल्स की एक अभिलाषा

देख उनके धार्मिक जीवन जीने की अभिलाषा,
बिशप पौल गोथल्स के मन में जगी एक आशा।
लड़कियों के लिए हुए संगत खोलने के अभिलाषी,
भर्ती होकर बन जाएँगी माता मरिया की विश्वासी।

बिशप की बातें सुन दिल को मिली सहानुभूति,
मदरों के संग रहकर होने लगी खुशी की अनुभूति।
खुदा ने सुन लिया था उन लड़कियों की विनती,
करने लगीं अब, दिन, महीने, साल की गिनती।

होने लगी अब नाना भाँति के काम की अधिकता,
पर ये देने लगी खुषी से सेवा को प्राथमिकता।
अनाथ बच्चों की सेवा करने से मिली प्रसन्नता,
काम की अधिकता से अक्सर, मन था विचलता।

ठीक रीति से काम करने में होती कभी घबड़ाहट,
कभी तो दुःख से गायब हो जाती थी मुस्कुराहट।
पर ईश्वर और पापमोचक से मिला उन्हें दिलासा,
मन में सुलगती रही सदा, समर्पण की एक आशा।

संस्मरण – 42
भयानक महामारी से जंग

1895–96 को देश में फैली एक महामारी,
हैजे और अकाल से बढ़ गई लोगों की लाचारी।
हर शाम गरीबों को मिलता था भोजन सरकारी,
सभी बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरूष रहते उनके आभारी।

कमजोर–पीड़ितों को न थी चलने की शक्ति,
लाचार, बेचारों को भूख से मिले कैसे मुक्ति।
हर शहर व बस्ती में बरपा था मृत्यु का कहर,
उन आत्माओं की परवरिश कैसे करें इस पहर।

फादरों से अकेले न होते देख सेवा की गुंजाइश,
मदरों को भी मिला अपनी सेवा देने की फरमाइश।
करने लगे मिलकर संग–संग आत्माओं की परवरिश,
न पहुँच पाने के कारण लोग पड़े रह जाते लावारिस।

स्कूल में भी कर दी महामारी ने अपनी चढ़ाई,
कई लड़कियों के मर जाने से रूक गई पढ़ाई।
गाँव भेजे जाने से स्कूल से लेनी पड़ी विदाई,
सिर्फ चारों को करनी पड़ी मृत्यु से यह लड़ाई।

संस्मरण – 43
हाय ! कैसा था दुर्दिन

रोज–रोज बाँटती थी दवा, चावल, कपड़ा और चटाई,
घर–टोला बस्ती और गाँव–गाँव करती थी बँटाई।
जिन्हें जो दरकार हे बाँटती और देती वे दिलासा,
मरण संकट में पड़े लोगों में जगाती थीं एक आशा।

लोगों के रोने–विलखने की आवाज आती थी प्रतिदिन,
विनती, भोजन, आराम एवं फुर्सत के पल जाते थे छिन।
एक ही घर से कई मरते, हाय ! ऐसा छाया था दुर्दिन,
फादरों व मदरों को कब देखने को मिलेगा वह सुदिन।

उन दिनों मदर मेरी तेरेसा थी राँची की प्रधानि,
गरीब दीन–दुःखियों की थी वह प्रेमी और शान।
परोपकार के कामों में खर्च करती सारी आमदनी,
फिर वह बनी अनाथ बच्चों की सहायिनी।

अनाथों का पालन–पोषण करती असली माँ की नाई,
अथक चेष्टा से देती शिक्षा–दीक्षा और करती सेवकाई।
इस बीच सिसिलिया का घर जाना हुआ उचित,
बीमारी के कारण घरवाले न हों उसकी सेवा से वंचित।

पिताजी ने आकर मदर से ली अनुमति,
भाई था घर में तेज बुखार से पीड़ित।
भाई को जब मिला बीमारी से पूरा आराम,
सिसिलिया ने ली खुशी से कॉन्वेन्ट की राह।

संस्मरण – 44
राह पे काँटे न बनना

1896 को आया माता–पिता से विदाई का दिन,
सिसिलिया का घर से कॉन्वेन्ट जाने का सुदिन।
सब बात–काम में रहने लगी वे मदरों के अधीन,
उधर समाप्त हुआ धीरे से, महामारी के दुर्दिन।

दो सप्ताह के लिए तीनों बहनें पहुँची गाँव,
अन्तिम बार भाई–कुटुम्बों का छूने को पाँव।
जहाँ उन्हें मिलता रहा था शीतल एक छाँव,
अन्तिम विदाई सुनकर रो पड़ा था सारा गाँव।

विदाई की बेला में एक झंझट है खड़ी,
बढ़म्बई के जोनस की आँखे जो लड़ी।
मेरी बेर्नादेत्त से शादी की जोड़ दी कड़ी,
कह उठी कि राजी नहीं है वह इस घड़ी।

प्रभु येसु की सेवा करना चाहती हूँ सदा
हर बात, काम व चाल से पूर्ण हो ये वादा।
झकझोरती है मुझे मानवीय कमजोरी की हवा,
छोटा–सा कागज उड़ाकर भी न करना ये दावा।

बेर्नादेत्त देती है उसे अन्तिम विदाई का नमस्कार,
निकल पड़ती है करने को अपना सपना साकार।
मेरी बेर्नादेत्त को न था जोनस से कोई सरोकार,
जोनस को थी जीने के लिए मदद की दरकार।

संस्मरण – 45
जोनस और लुईसा की शादी

बेर्नादेत्त न थी कहीं घूमने–फिरने की आदी,
उसने शादी के वास्ते जोनस को सलाह दी।
पत्थलकुदवा मतियस की बेटी लुईसा से शादी,
लकड़ा परिवार की लड़की है बड़ी सीधी–सादी।

बेर्नादेत्त ने दिया उन्हें प्रार्थना का दिलासा,
करेगी घराने पर ईश्वरीय कृपा की वर्षा।
दृढ़प्रतिज्ञ है उनके पुत्र–पत्रियों की अभिलाषा,
कहना मानकर देंगे वे जीवन की एक नई परिभाषा।

हो गई लुईसा एंव जोनस तिग्गा की शादी,
मदरों की आज्ञा से शादी में जाने की अनुमति मिली।
भोज के पश्चात घूम आई सुसई व सरगाँव की वादी,
घरानों ने खुशी से किया आवभगत् होकर धन्यवादी।

घरानों ने दिया बेटियों के वास्ते एक बड़ा भोज,
राँची सिरोमटोली को भेजा ननवेज।
घराने के लोग खूब रोये कलपे विदाई के दिन,
प्रभु की सेवा करने चल पड़ी बेटियाँ तीन–तीन।

संस्मरण– 46
ईश्वर की इच्छा

महामारी टली, स्कूल में खुशी की लहर छाई,
अब पूर्व के कार्यों में फिर से आ गई सरगर्मी।
निःसंदेह, असीम दयालु परमेश्वर की अच्छाई,
सेवा कार्यो को देख सबकी आँखे चकराई,
सचमुच ! तृत्वमय ईश्वर की यही इच्छा है भाई।

सबने देख लिया इनकी बात, काम और चाल,
इरादा इनका मजबूत है और सभी हैं सुचाल।
परदेश की लड़कियाँ कार्य करती हैं बेहाल,
क्यों इस देश की लड़कियाँ रहेंगीं निढाल !
सचमुच ! यह ईश्वर की इच्छा का है कमाल।

यह तो प्रतापी ईश्वर का ही मनोरथ है –
पहले नियम विरूद्ध कहकर लोग भरते थे आह,
देश की लड़कियाँ न रह सकती बिनव्याह।
पर आर्च बिशप ने स्वयं दिया गवाह,
इस देश की लड़कियाँ भी रह सकती बिन ब्याह।

यह प्रतापी परमेश्वर का ही मनोरथ है –
इस जंगली देश की लड़कियाँ है सबला।
नहीं समझे इन्हें विल्कुल अब्ला,
फादर डिस्मिथ एवं मदर गोंजागा हैं संग,
मदर मेरी तेरेसा का मजबूत साथ है,
कहो, क्या कोई कार्य असंभव हैं
नहीं न, क्योंकि यह उस ईश्वर की इच्छा है।

संस्मरण – 47
एक मधुर स्मृति

8 दिसम्बर 1896, सोदालिती की स्थापना,
50 सीधी लड़कियों ने की कल्पना।
सुचाल लड़कियाँ बनना था बड़ा मुश्किल,
जो मरिया संगत से हुआ हल ।

मदरों ने चिपकाए पचास सीधी लड़कियों के नाम,
चिन्हित होती जब कभी वे करती गलत काम।
छोटा तगमा व पतला नीला फीता पहनती जो थीं सुचाल,
फिर चयन हेतु नाम चिपकता गया, कुछ काल।

अन्ततः सुचाल लड़कियाँ ठहराई गई संगत योग्य,
24 मई 1897 को 12 लड़कियाँ हुई इसके आशिष योग्य।
फादर सपार्ट के हाथों मिली उन्हें जीवन की सौगात,
यही था राँची सोदालिती के शुभारम्भ का नवप्रभात।

विवाह के वास्ते सबों ने जोर जुल्म किया सदा,
भाई–कुटुम्बों के समक्ष शादी न करने का वादा।
पूरण की पुत्रियों ने किया कुँवारी रहने का वादा,
भाई–कुटुम्बों की हर कोशिश हुई बेफायदा।

संस्मरण – 48
चार मछुआरिनों का बुलावा

धन, यश व सम्मान न चाहिए था, येसु के अलावा,
बिशप गोथल्स ने दी मंजूरी और बढ़ावा।
संगत जीवन से ही बड़ा न कोई और चढ़ावा,
26 जुलाई 1897, हुआ चार मछुआरिनों का बुलावा।

खबर पाकर मदर मेरी तेरेसा ने घर भेजा लेने विदाई,
घर जाकर खुशी से धर्म की बातों पर की उनकी अगुवाई।
ताकि विदाई की बेला में दिलासा और ढाढ़स दे जुदाई,
पूरे पंद्रह दिन बाद आखिर देना ही पड़ा उन्हें विदाई।

ओह ! विदाई की घड़ी कितना ही दिल दुखे,
दिल टूटे आँसुओं के बाँध टूटे।
दुःख से गला रूँधे, दुःख से बात न फूटे,
अश्रुधार के बीच साहस उनके उेसे जुटे।

आँसू रोक, प्रेम का चुम्बन दे, झट से हुई रवाना,
रोते विलखते, टकटकी लगाये खड़ा रहा घराना।
उन्हें जाते देख टकटकी लगाये, देखता रहा जमाना,
उन चार प्रथम बहनों का साकार हुआ सपना।

संस्मरण – 49
समर्पण की प्रार्थना

हे येसु मेरे छोटे चढ़ाव को मंजूर कर।
तूने मुझे अपने को सौंप दिया है,
मैं तुझे अपने को सौंप देने पाऊँ।
मैं तुझे अपना बदन दे देती हूँ कि साफ–निर्मल रहे।
मैं तुझे अपनी आत्मा दे देती हूँ कि पाप से अलग होवे।
मैं तुझे अपना दिल दे देती हूँ कि तुझको नित प्यार करे।
जितनी साँस मरने तक और मरते ही मुझे लेना है,
सबको मैं तुझे दे देती हूँ।
जीने में भी, मर जाने में भी,
मैं तुझे अपने को दे देती हूँ
कि युग–युग तक मैं तेरी ही रहूँ।

इस विनती के बाद ही लेती थीं परमप्रसाद,
प्रथम माताओं ने लिया नियमों का अच्छा स्वाद।
एक साथ प्रार्थना, खाना व हँसी – ठिठो का लेती स्वाद,
आत्मिक साधना और धर्मशिक्षा का लेतीं वे बड़ा आनन्द।

सबों का एक रंग का होता था यह पहिरावा,
नीले रंग की साड़ी, सफेद ब्लाउज व चन्दवा।
पाँच गाँठों वाली कमरबन्द व सिर पर घुँघट,
सप्ताह में दो बार धर्मोपदेश और धर्मपाठ।

संस्मरण – 50
यूरोपियन पहिरावा स्वीकार नहीं

यूरोपियन नहीं, स्वदेशी पहिरावा हुआ अंगीकार,
साड़ी पहनना हुआ सभी धर्मबहनों को स्वीकार,
सिर के बालों को काटने की रही उनकी मर्जी,
ताकि दिलोजान से सदा पूर्ण हो ईश्वर के मर्जी।

लंबी काली केश – राशि है नारी का श्रृंगार,
उसे भी खुशी से त्याग देने को हैं तैयार।
अपने बालों को काटना है यदि नामंजूर,
सच ! निज हाथों से काट लेगें जरूर।

हमारे देश की हालत है बड़ी लाचारी,
हमें कबूल नहीं, यूरोपियन वस्त्रधारी।
अगर आ पड़े इस देश में कभी धर्म सतावट,
अपने लोगों के बीच रह सकेंगे बिन घबराहट।

बिशप गोथल्स व मदर को वस्त्रों की चिन्ता सतायी,
पर आठ गज वाली नीले रंग की साड़ी उन्हें खूब भायी,
पाँच गाँठवाली कमरबन्द और एक सफेद सूती रस्सी,
साथ में सफेद लम्बी कुर्त्ती और सिर पर सफेद पट्टी।

संस्मरण – 51
ईश्वर की कुव्वत

रही असीम दयालु परमेष्वर की मेहरबानी,
प्रभु की खातिर समर्पित कर दी जिन्दगी।
बिशप स्वामी ने लिखा निज हाथों से रूल,
जोन डिस्मिथ ने किया उसका हिन्दी मूल।

6 फरवरी 1899 ई. को हुई चार जन सुशोभित।
उनकी असीम ईश्वरीय दया से हुई विभूषित
मान्यवर बिशप पौल गोथल्स किये हैं आशिषित,
शुभ दिन में वे हुई है आज कितनी प्रफुल्लित।

आठ गज वाली नीले रंग की साड़ी,
किनारे दो सफेद धारी वाली पहननी पड़ी।
पाँच गाँठ वाली कटिबंध व रोजरी एक बड़ी,
सारी चीजें मिली उन्हें सिस्टर बनने की घड़ी।

सिस्टर होते साथ नाम पड़ता था बदलना,
परन्तु इन्हें पड़ा निज नाम को ही अपनाना।
लोगों ने उन्हें भी उनके निज नाम से जाना,
बस निज नाम के आगे पड़ा अन्ना जोड़ना।

सिस्टर अन्ना बेर्नादेत्त और अन्ना सिसिलिया,
सिस्टर अन्ना बेरोनिका और सिस्टर अन्ना मेरी।
इस शुभ दिन में शरीक हुई मदर गोंजागा,
साथ आई थी वह लोरेटीन सिस्टर तेरेसा।

संस्मरण – 52
अद्‌भुत प्रेम का फल

लड़कियों का दिल आनन्द से था सराबोर,
मदर का दिल भी पुलकित हुआ था जरूर,
आदिवासी लड़कियाँ दुल्हिन बनीं खीस्त की,,
खुशी से सबकी आँखों से आश्रुधार छलकी वहीं।

सिस्टर तेरेसा ने दिया ईश्वर को धन्यवाद,
खुशी से बिठाया बेर्नादेत्त को अपनी गोद।
बूढ़े सिमेयोन की भाँति पुकार उठी अबला,
हे प्रभु, अपनी दासी को अपने पास बुला।

मेरी आँखों ने देखा तेरे अद्‌भुत प्रेम का फल,
जंगली प्रदेश की लड़कियाँ भी हुई हैं सफल।
मिला उन्हें अब आपकी दुल्हिन बनने का मीठा फल,
इसे अब कोई न कर पाएगा विफल।

पिता पूरण प्रसाद का दिल भी है अति हर्षित,
सारे गिला शिकवा भूल कर सभी है बति आनंदित
किया है इस्ट –कुटुम्बों व मित्रों को आमंत्रित,
घर पर एक बड़े भोज का किया है वह आयोजित।

उसी दिन भाई अल्फ्रेड की भी थी शादी,
मान्यवर ने कही एक बात सीधी–सादी।
तीनों बेटियों के नाम पहले हो धन्यवादी,
इसके बाद हो बेटे अल्फ्रेड की शादी।

संस्मरण – 53
जीवन एक संगम

मानव जीवन है एक मधुर संगम,
पर इसका पथ है अति दुर्गम।
पूरन ने दिया एक भोज धूमधाम,
बेटे–बेटियाँ आनंद विभोर हैं आज शाम।

ढाई वर्ष वे नवशिष्यालय में रही,
मदर मेरी एमेल्डा प्रथम नोविस मिस्ट्रेस बनी।
किया अपनी बात, काम व सलाह से अगुवाई,
हो सकेगी जिससे समस्त धर्मसमाज की भलाई।

बाद मदर मेरी गोंजागा सि. तेरेसा लौटी कलकत्ता,
बदले में मदर मेरी गेटरूड राँची आई अलबत्ता।
हरसंभव किया सेवा मेरी ने असल माँ की हमेशा,
ऐसी बड़ी फिक्र कि कभी उनको न हो निराशा।

संघ जीवन हुआ जिनसे बड़ा खुश तब
अचानक हो गया कैसे बुराहाल
कैसे यह खुदा की मरजी है
यही हमारी अरजी है।

संस्मरण – 54
आयी शुभ सुहानी

जीवन में आती रहती है सुख–दुःख की बेला,
याद रखेंगे प्रेम बेबयान उपकारों की रेला।
इहलोक व परलोक करें ईश्वर से फरियाद,
हैं ऋणी सभी पर कुदरती कृपाओं से आबाद।

मदर ने दिया दृढ़ता व शाँति की शिक्षा,
कहाँ – विरह मिलन है ईश्वेच्छा।
दूर हों या निकट मन में साथ रहने की सदिच्छा
प्रभु की बड़ाई खातिर करें आत्माओं की सुरक्षा।

ईश्वर कृपा से फिर मुलाकात की आशा,
जुदाई में भी भलाई है न ही कोई निराशा।
येसु नाम से मदर ने दी आशिष,
बोली अवश्व पूरी होंगी तुम्हारी ख्वाहिश।

दो वर्षों का नवशिष्यालय समय था बड़ा अलबेला,
दिन आया लेने को मन्नत धर्मसमाज में पहला ।
आर्चबिशप महामान्यवर ने दिया है नियमों की लंबी फेहरिश्त,
रूग्नता के कारण बिषप न ले सके शिरकत।

आदेश से भेजे गए फा. म्यूलमैन,
8 अप्रैल 1901 को किया सबने अपना व्रत ग्रहण।
संत अन्ना का चन्दवा आशिष के बाद मिला,
काले फीते में गले का हार बन वह फूल खिला।

संस्मरण – 55
सुख की अभिव्यक्ति

ओह ! कैसे करें अपार सुख का बयान,
दयासागर दयामय ईश्वर का गुणगान।
हमें अपनाकर बढ़ा दिया है हमारा मान,
मिला मुझे उसके निज होने का वरदान।

कौन नाप सका है उसकी ऊँचाई,
यह ली है किसने उसकी गहराई।
विशेष कृपा से मिली उन्हें यह मंजिल,
खुद की खुदार्द से मिला है मंजिल।

मेहरबान ईश्वर ने ही किया है आबाद,
यथाशक्ति उसे प्यार, आदर व धन्यवाद।
सुख–दुःख, थकन, तंगहाली न हों बर्बाद,
प्राण न्योछावर तब करते रहें सेवा निर्विवाद।

मन्नत के दिन खुशी हुई, है दुगुणी,
मदर मेरी गोंजागा संग खुशी हुई चौगुणी।
दया और सब कुछ के लिए आप रहें मेहरवान
उपकारों के लिए धन्यवाद, मिला जो महादान।
माता–पिता व मित्र–बन्धुओं ने दिया प्रेम अपार,
दिया आशीर्वाद इस खुशी में शरीक होकर,
असीम प्रेम के लिए ग्राह्य हो हमारा आभार
तुझे पसंद आये हमारा नन्हा प्यार।

संस्मरण – 56
चार बंगाली लड़कियों की जीत

मन्नत की घड़ी फा. जॉन डिस्मिथ गए मोरापाई,
संगत जीवन हेतु किया चार लड़कियों की अगुवाई।
उनकी अच्छी बातें सुन बंगाली लड़कियाँ पहुँची
ये कुंवारियाँ सहभाग हुई मन्नत में आकर राँची।

कभी खुशी कभी गम यही तो है दुनिया की रीत,
संगत जीवन हेतु हो गई छोटानागपुर की जीत।
4 जुलाई 1901 को बिशप गोथल्स पहुँचे स्वर्ग,

उनके लिए माँगी हमने, अनन्त शान्ति का मार्ग।

26 जुलाई 1901 व 1902 को हमने मन्नत दुहराया,
8 दिसम्बर 1902 को बंगालियों ने ग्रहण किया पहिरावा।
ये थीं सिस्टर अन्ना रेजिना एवं सि. अन्ना बेरोनिका,
सिस्टर अन्ना अगाथा और सिस्टर अन्ना मगदलेना।

लोरेंटीन मदर छोड़ चलीं आज छोटानागपुर,
बेल्जियम से आई बदले में उर्सुलाइन मदर।
धर्मबहनें खोलेंगी बंगाल में संगत–शाखा,
भविष्य में पूरा हो मिशन का सपना अनोखा।

संस्मरण – 57
संत अन्ना – कलकत्ता

मोरापाई में बना पहला नवनिर्मित गृह,
यह है संत अन्ना कलकत्ता का मातृगृह।
होने लगी शिक्षा–दीक्षा एवं क्रिया–कर्म,
लोरेटीन मदरों ने जो समझाया उन्हें जीवन का सच्चा मर्म।

बंग लड़कियों के लिए ईश्वर की कृपा अपार,
फा॰ जोन बने संत अन्ना, राँची के सलाहकार।
बन गए कलकत्ता संत अन्ना के भी मददगार,
खुला उनके लिए भी संगत जीवन का द्वार।

12 वर्षों तक लोरेटीन मदरों ने किया मदद,
जंगली मुल्क की लड़कियों को दिया नेह अदद।
खीस्त विश्वास का बीजरोपण किया।
उनसे बिछुड़ जाने का दुःख हमें बहुत सताया।

ईश प्रेम में शिक्षित होने की अभिलाषा,
खूब रहीं यहाँ की लड़कियों व स्त्रियों की आशा।
कुछ वर्षों में होने लगी फल–फूलों की प्रत्याशा,
मदरों के प्रेम व मेहनत से मिटी निराशा।

संस्मरण – 58
चुका नहीं सकते कर्ज

फा. अल्फोंस धर्म उपदेशक, गुरू व पालक,
23 वर्ष 3 महीने तक किया हमें आध्यात्म,
1904 को बिशप म्यूलमैन की स्नेहावलि,
बनाया संत अन्ना की पुत्रियों की नियमावली।

धर्मविषयक ध्यान–संग्रह तथा माता का दर्पण,
फा. अल्फोंस ने खुद लिखा और किया समर्पण।
पुस्तकें थीं धर्म बातों की मधुर व सरस तर्पण।
हम लोगों की खातिर खुद को किया है अर्पण,

चाहे चिलचिलाती धूप हो या मूसलाधार बारिश,
चाहे थर –थर, कंपाने वाली ठंड।
हर दिन दिया गरीब छोटी बेटियों को धर्मोपदेश,
सुख–दुःख एवं घटी–बढ़ी में पूर्ण किया ख्वाहिश।

हर जोखिम में किया है हमारी देखभाल,
मुर्गी जैसे रखती अपने चूजों को सम्भाल।
ठीक वैसे सदा रखा हमारा ख्याल,
उपकार के बदले न देने का रहेगा मलाल।

संस्मरण – 59
राँची का मातृगृह

फा. अल्फोंस ने किया इतना उपकार,
भूला नहीं जा सकता यह परोपकार।
4 अप्रैल 1926 ई. का पास्का रविवार,
मिला उन्हें अनन्त विश्राम का उपहार।

13 जनवरी 1903 का वह पावन दिन,
प्रथम उर्सुलाइन मदरों का शुभागमन।
थी मदर गोंजागा एवं मदर अन्तोनी,
साथ में मदर उर्सुला एवं सि. सबीना।

संत अन्ना की पुत्रियाँ थीं उनके अधीन,
किया उनकी चिन्ता एवं पालन–पोषण।
उनकी सुरक्षा में बीता 16 वर्षों का काल,
दया, क्षमा, सेवा, सहयोग में बीता वह लंबा काल।

उर्सुलाइन बहनों से अलग हो गये हम,
संत अन्ना की पुत्रियों का अपना बना मातृधाम।
नवशिष्यों की होने लगी शिक्षा–दीक्षा यहाँ।
प्रधान को पुकारती हैं प्यार से माता।

संस्मरण– 60
प्रेरिताई के कार्य

मन्नत बाद भेजी जाती तीन – चार जन एक साथ,
मिलता येसुसमाजी भाइयों का भी साथ।
लड़कियों के लिए था स्कूल व स्त्रियों को धर्म–शिक्षा,
और न ही देती थी इन्हें किसी तहर की परीक्षा।

26 जुलाई 1903 ई. को तीन वर्षों का लिया मन्नत।
26 जुलाई 1906 ई. को लिया अन्तिम–मन्नत,
बिशप म्यूलमैन ने ग्रहण किया उनका यह समर्पण,
उर्सुलाइन मदरों ने किया है इस दिन को तर्पण।

प्रेरिताई कार्य क्षेत्र रहा– राँची (1903), खूँटी (1904), टोगों (1906), रेगाड़ी (1908), सोसो, बसिया, नवाटोली (1903), कुर्डेग (1906), सामटोली (1915), जषपुर, गिनाबहार (1918), 1919 सामटोली, कुर्डेग, जशपुर, गिनाबहार, कटकाही, नवाडीह और मझाटोली, 1921 हमीरपुर, 1922 मांडर और गयबीरा, 1923 छेछाड़ी, महुआडांड़, 1924 तोरपा, 1926 लचड़ागढ़, 1927 दिघिया, 1928 कर्रा, 1934 से जशपुर–तपकरा में कार्यरत। 1919 तक कई जगह कार्यरत। राँची, खूँटी, रेंगाड़ी और बसिया नवाटोली, मिला उर्सुलाइन सिस्टरों का साथ। 1926 से और एक कॉन्वेन्ट गायबीरा, मिला होली क्रॉस की पुत्रियों का साथ।

संस्मरण – 61
एक शोकमयी घटना

28 अगस्त 1906 को हुई एक शोकमयी घटना,
हैजे से एक दिन में तीन सिस्टरों का मर जाना,
बीमारी के पंजे में सैकड़ों लोगों का गुजर जाना,
छोटे एवं अनाथ बच्चों का जीवन हो जाना सूना।

अनाथ बच्चे लाये जाते उर्सुलाइन मदरों के पास,
संत अन्ना की पुत्रियों पर ही थी सेवा की आस।
बच्चे थे बीमार पड़े थे बिना परवरिश,
संत अन्ना की पुत्रियों ने की आशिषों की बारिश।

संत अन्ना की पुत्रियाँ आज्ञा पाकर करने लगी सेवा,
हुआ एक हादसा, मिला हाय, यह कैसा मेवा।
एक ही दिन तीन धर्म बहनें एक साथ चल बसीं,
उसी दिन महीने भर की बच्ची भी चल बसी।

इस दिन बिशप म्यूलमैन भी थे मनरेसा में हाजिर,
वे खुद भी वहाँ पहुँचे वहाँ पाकर ऐसी शोकमयी खबर।
पास जाकर दिया उसे आशिष,
और पूछने लगे इस शोकमयी दशा का कारण।

संस्मरण – 62
एक कठिन आदेश

एक ही दिन तीन सिस्टरों की मृत्यु से संतप्त,
महामान्यवर बोल उठे होकर अति दुःखित–
" आज के बाद कभी न हो कि गोद के बच्चे
संत अन्ना की पुत्रियों के हाथों सौंपे जाएं।"

यह है महामान्यवर बिशप का सख्त हुक्म,
कभी न करें छोटे बच्चों को पालने का काम।
ऐसे मरण से बाधित होगा मिशन का काम,
मदर खुद ढूँढ़ लें इसका अन्य कोई विकल्प।

महामान्यवर की आज्ञा से उन्हें मिला बल,

उस समय से हम न लेतीं दुधमुँहों बच्चों का भार।
लोगों के मन में उठता है बारम्बार ये सवाल,
क्यों नहीं लेतीं अनाथ बच्चों के पालन का भार।

बोलने वाले तो बातें करते हैं हजार,
बोलने वाले खुद क्यों न उठाते भार,
एक, हम लोग हैं गरीब और लाचार,
और मिशन के कार्य हैं नाना प्रकार।

साथ है हमारे देश के नियम हजार,
लड़कियाँ न होतीं कभी हिस्सेदार।
वे न उठा पाएँगी अनाथों का भार,
ऐसा भारी हुक्म दे गये महामान्यवर।

संस्मरण – 63
जुबिली की बेला

19 मार्च 1890 ई. था वह शुभ दिन,
लोरेटो मदरों को मिला एक स्थान।
खोला राँची में बच्चों का एक स्कूल,
धर्मबहनों के लिए यादगार रहा यह साल।

1915 को था इसका जुबिली वर्ष।
सभी ने मनाया महा उत्सव सहर्ष।
लोरेटो मदर भी आज हुए शरीक,
प्रदान किया पैरोंवाली सिलाई मशीन।

26 जुलाई 1897 को हुई संत अन्ना धर्मसंघ की स्थापना,
वे चाहती थीं यादगारी में जुबिली समारोह मनाना,
पर, 21 नवम्बर 1921 को बरोनिका स्वर्ग सिधारी,
30 दिसम्बर 1921 को सि. अन्ना मेरी भी चल बसी।

दो सिस्टर थैसिस बीमारी से थी पीड़ित,
धैर्य व साहस से दिल था उनका प्रज्ज्वलित।
मरण पूर्व हुई सभी संस्कारों से विभूषित,
हो गई स्वर्गीय दुल्हे ख्रीस्त में समाहित।

तब माता बेर्नादेत्त और माता सिसिलिया,
किया तीन दिनों की आध्यात्मिक साधना।
25 नवम्बर 1922 को मना धूमधाम जुबिली,
महागिरजा में चढ़ाया धन्यवाद का बलिदान।

संस्मरण – 64
प्रेम भरे उपहार

मिस्सा के बाद बैण्ड व फटाकों से गूँजा आकाश,
जुड़ गए दोनो हाथ और लाग हुए बहुत खुश।
ईश्वर की अपार महिमा से खिल उठा गुलशन,
खुशी के दिन में लोगों से मिले अमूल्य दान,
प्यार के उन उपहारों का मदर करती है बखान।

सेकुलर फादरों ने दो सौ, लोरेटो मदरों ने सौ
येसु समाजियों ने दिया पैरवाली मशीन,
गिरजे के लिए मिला धूपदानी एवं दान,
कलकत्ते से पवित्र हृदय की छापवाली
चार–चार बॉक्स मिली रंगीन मोमबत्तियाँ।

येसुसंघियों ने दिया पीतल के दो जोड़े फूलदानी,
उर्सुलाइन बहनों ने 10 किताब 'ख्रीस्तान प्रश्नोत्तरी' की
हॉस्टेल की लड़कियों ने दिया अभिनन्दन पत्र व फूल,
संत जॉन्स के बच्चों ने पढ़े अभिनन्दन पत्र,
गुलदस्ते एवं येसु के पवित्र दिल की सुन्दर मूर्ति।
कैसे करें हम उन प्रेमी उपहारों का बयान।

संस्मरण – 65
मैं तुम से कहता हूँ

अभिनन्दन पत्र और फूलों के गुच्छे से मिला प्यार,
चार बजे साक्रामेन्त की आशिष से हो गये सराबोर।
सन्ध्या को उर्सुलाइन हॉल में नाटक ने लायी बहार,
बेबयान कार्यों हेतु माता बेर्नादेत्त ने प्रकट किया आभार।

परमेश्वर के प्रेम और आशिष से दिल हुआ गदगद,

पुरोहितों, मदरों, छोटे–बड़े सबको हृदय से धन्यवाद,
सफल हो सका जुबिली का यह शुभ मिलन समारोह,
लोगों और येसु के प्रेम से मदर की पूरी हुई मुराद।

" मैं तुमसे सच कहता हूँ –
जब–जब तुमने मेरे इन छोटे से छोटे
भाइयों में से एक के साथ ऐसा किया
तब–तब मेरे ही साथ ऐसा किया।"

" मैं तुमसे सच कहता हूँ –
प्याले भर कच्चे पानी के लिए येसु ने,
स्वर्ग का सुख देने का किया करार।
क्या दया के इन मंगल कार्यों के लिए
येसु अधिक से अधिक न देंगे उपहार !"

संस्मरण – 66
ईश्वर सबका मालिक है

ईश्वर ही दुःख और सुख का मालिक है !
8 अप्रैल 1901 को था प्रथम माताओं का प्रथम मन्नत,
8 अप्रैल 1926 को होना था 25 वर्ष की जुबिली।
एक बार फिर से एकत्र हुई धर्मबहनों की टोली ।

महामान्यवर गुरू, पालक पिता रहे सबके प्यारे
फा. स्कारलैकन ये.स. निमोनिया से स्वर्ग सिधारे।
कैसे करें इस मृत्यु के शोकमय दुःख का बयान,
बस ! ईश्वर के पवित्र नाम का करें गुणगान।

ईश्वर ही दुःख और सुख का मालिक है,
मिल गए नये पालक पिता फा. फ्रेडक्रूक्स
यह सुन न रहा हमारी खुशी का ठिकाना
ईश्वर का आभार ! नाम नहीं था अनजाना।
जब चारों माताएँ थीं लोरेटो की लड़कियाँ,
फा. पील दिया करते थे दैनिक धर्म–शिक्षा।
1895–96 को था जब अकाल व महामारी,
मनरेसा से दौड़–धूप कर किया निगरानी।

संस्मरण – 67
जुबिली की बेला

27 मई 1926 का दिन रहा अलबेला,
आखिर आ गयी जुबिली की वह बेला।
माता बेर्नादेत्त एवं सिसिलिया ने किया,
फा. जे. से तीन दिनी आत्मिक साधना।

फा. वान ने कॉन्वेन्ट के छोटे गिरजे में ,
प्रथम पावन बन चढ़ाया जुबिली–बलिदान।
सह अनुष्ठाता रहे फा. पील येसुसमाजी,
चार सेमिनरीयन बने मिस्सा के सेवक।

दोनों धर्मबहनों ने दुहरायी अपनी मन्नत,
आशिषित होकर की विशेष मिन्नत।
सेमिनरियनों ने गाया मधुर मिस्सा–ंगीत,
3 बजे की आशिष से हुए सभी पुलकित।

उर्सुलाइन सुपीरियर प्यारी मदर अन्तोनिया,
अन्य उर्सुलाइन धर्मबहनों ने भी भाग लिया।
प्यारी लोरेटो बहनें खुशी में न हुईं उपस्थित,
इस मधुर बेला में भेजा सौ रूपये की सौगात।

संस्मरण – 68
मुर्गी के डैने तले छाँव

हर घड़ी मिली मानो मुर्गी के डैने तले सुरक्षा
उर्सुलाइन सुपीरियर ने की आज यही आकांक्षा।
दिया है सुन्दर फूलोंवाला मनमोहक फूलदानी,
बड़े पर्वों में रखा जाता है साक्रामेन्त रूहानी।

फादरों, मदरों व सेमिनरियों ने किया आबाद,
उनके उपकारों के लिए हृदय से देते हैं धन्यवाद।
दुआ है उस असीम दयालु प्रतापी ईश्वर से,
हम गरीब हैं तो क्या ! वही आपको इनाम दे।

फादर पील येसुसमाजी अति प्यारे गुरू और पालक,
4 अप्रैल 1926 से 28 दिसम्बर 1933 तक रहे संरक्षक,

सात साल आठ महीने तक निभाया अपना फर्ज,
संत अन्ना की पुत्रियों पर यह कैसा आत्मिक कर्ज !

प्यारे फादर की सुरक्षा में हमलोग ऐसी थीं,
मानों मुर्गी के डैने के नीचे प्यारे–प्यारे चूजे।
चाहे दुःख विपत्ति हो या काम की थकावट,
उदासी में भी चेहरे पर खेलती मुस्कुराहट।

प्यारे फादर थे कुछ अद्‌भुत गुणों से भरपूर,
वे थे साहसी, परिश्रमी और बहादुर।
मिष्टभाषी, दयालु लगते थे वे परमवीर गुरू,
औरों को भी बाँटते वे अपने जैसे सारे गुरू।

संस्मरण – 69

क्षणिक है जीवन

फा. पील ! टूटे हृदयों में करते उत्साह का संचार,
कहते, प्यारी बहनो ! कुछ दिनों का है यह संसार,
जीवन है आत्मिक व शारीरिक दुःख–संताप से चूर,
येसु, माँ मरिया और सभी संतों के जीवन का गुर,
प्रेम, विश्वास और भरोसा में बने रहना वही है सच्ची डगर।

फा. पील ! सभी धर्मबहनों को हिदायत देते बारम्बार,
देखिए ! प्यारी बहनो ! कुछ दिनों का है यह संसार,
सदा याद रहे मोटर गाड़ी या रेलगाड़ी में बैठकर
समतल रास्ते से स्वर्ग पहुँचा नहीं जा सकता चलकर
शैतान को जीत, दुनिया और अपने तन से लड़कर ।

आध्यात्मिक गुरू थे सारे गुणों की खान,
पतित, निर्बल को हँसाकर भरते थे जान,
दिल में शाँति, खुशी और जीत की शान,
शैतान से जीतकर रखना जीवन का मान,
याद रखना ! कुछ दिनों का है यह जहान ।

फा. पील के उपकार का बदला कैसे चुकाएँ ?
अपने अज़ीज़ को खोने का दर्द कैसे भुलाएँ ?
28 दिसम्बर 1933 को सीतागढ़ का जीवन,
अपने प्रधान की आज्ञा थी ईश्वर की यगन,
ऐसे आध्यात्मिक गुरू का शत् शत् बार नमन ।

संस्मरण – 70

प्रभु के सेवक

संत स्तानिसलास कॉलेज में वर्ष भर भी न बीते,
तीन दिनों तक वे बिस्तर पर बेहोश पड़े रहे,
5 अक्टूबर 1934 को सदा के लिए प्रभु में सो गये
ईश्वर की महिमा आत्माओं की मुक्ति के लिये
खुशी से अर्पण किया अपना सम्पूर्ण जीवन ।

अपने सेवक को येसु ने दिया अनन्त जीवन,
जहाँ मिलती शान्ति, खुशी और अमन – चैन ।
" हे भले और विश्वास योग्य सेवक,
अपने स्वामी के आनन्द का सहभागी हो।"
ऐसे थे भले और विश्वासी सेवक फा. पील।

आध्यात्मिक पिता थे वे विश्वासी एवं दानवीर,
पुरोहिताभिषेक के दिन मिले अपने सारे उपहार
सस्नेह किया संत अन्ना की धर्मपुत्रियों को अर्पण।
इस दुनिया में प्रेम से बढ़कर नहीं कोई समर्पण
ऐसे जीता फादर पील ने क्षणिक जीवन का रण ।

यही नहीं सोसो की धर्मबहनों के लिए
कार्यकर्त्ताओं व कुलियों के लिए,
चावल, दाल, नमक, चीनी, साल भर के लिए,
मिट्टी का तेल भी दिया दैनिक प्रयोग के लिए,
कितने भले और विश्वास योग्य थे फादर पील।

———————————